पंजी. क्र. S/25125/1993

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13, कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष-011-22914799, 9868711893, 9414040403

E-mail: abrsmdelhi@rediffmail.com, shaikshikmanthan@gmail.com, www.abrsm.in

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन विवरण

24-26 अक्टूबर, 2009 जयपुर (राजस्थान)

उद्घाटन सत्र

मुख्य अतिथि- मा. मोहनराव भागवत (प.पू. सरसंघचालक, रा.स्व.संघ)

महामंत्री उद्बोधन - डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

- अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की स्थापना शिक्षकों के साथ-साथ शिक्षा के बारे में भी समग्र चिन्तन की सोच के साथ हुई।
- अखिल भारतीय हमारा व्याप है, और राष्ट्रीय हमारी सोच।
- संगठन ने कालगणना के भारतीय वैज्ञानिक आधार को शैक्षिक जगत एवं समाज में स्थापित करने का कार्य योजनापूर्वक हाथ में लिया है और इसका प्रभाव दिखने लगा है।
- शिक्षकों के अधिकार की बात ही नहीं वरन् 'शिक्षा हित में शिक्षक' इस ध्येय के साथ कर्तव्य बोध भी हो, इस हेतु विवेकानन्द जयंती (12 जनवरी) से सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती (23 जनवरी) के मध्य कर्तव्य बोध दिवस मनाया जाता है।
- वर्तमान में 22 राज्यों के 35 राज्य संगठन संबद्ध है जिनकी सदस्यता सवा सात लाख है।
- 'राष्ट्रहित में शिक्षा, शिक्षा हित में शिक्षक, शिक्षक हित में समाज' के ध्येय वाक्य को लेकर चलने वाले अपने संगठन की सदस्यता 65 लाख शिक्षकों में से सर्वाधिक बने, इस दिशा में अभी काफी कार्य करना है।

अध्यक्षीय- प्रो. के. नरहरि

- संगठन ने शिक्षण को प्रोफेशन नहीं, मिशन माना है।
- राष्ट्र को पुन: विश्व गुरु की भूमिका तक स्थापित करने की दृष्टि से कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के निर्माण के लिए शिक्षक जुटें, ऐसी दिशा में संगठन कार्य कर रहा है।

मा. मोहनराव भागवत

- अपना संगठन धारा से उल्टा चलने वाला संगठन है। जब सब शिक्षक संगठन अपनी मांगों की बात करते हैं, हम कर्तव्य एवं सामाजिक दायित्वों की बात करते हैं। इसलिए हमने नाम शिक्षक संघ न रखकर 'शैक्षिक' रखा है।
- राष्ट्रीय सोच लेकर चले हैं तो ध्यान आता है हमारी पहचान पद प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए संगठन में कार्य करना नहीं वरन् संगठन की पहचान ही हमारी पहचान है।
- देश की परिस्थिति डरावनी है। क्षेत्र, जाति, संप्रदाय आदि का डर दिखा कर कार्य किया जाता है लेकिन हमारी सोच सात्विक प्रेम एवं समन्वय की है।
- हम All are one सारी चीजें एक जैसी है न कहकर All is one सब कुछ एक ही यह कहते हैं। हमारी सोच सम्बन्धों पर आधारित है न कि पश्चिम की तरह सौदे के आधार पर । सौदा तो जब तक लाभकारी होता है तभी तक चलता है।
- हमें विचार करना होगा कि क्या हम राष्ट्रीय हैं? 'मैं' नहीं संगठन- संगठन की सोच- मेरी सोच और संगठन की पहचान, मेरी पहचान बने।
- संगठन का आशय भीड़ नहीं बल्कि उद्दात भाव से पवित्र लक्ष्य को लेकर एक सोच से चलने वाला अनुशासित समूह। संगठन में श्रद्धा, विश्वास, आत्मीयता आवश्यक तत्व।
- हमें भारत का नेतृत्व करना है तो शुद्ध भाव के साथ दृढ़ता से कार्य करना होगा। इस विश्वास के साथ कि मैं सत्य के साथ चलूँगा, सत्य कभी डूबता नहीं है यदि कदाचित डूबा तो मैं भी इसके साथ डूबूंगा।
- हमें शिक्षा के बारे में समग्र दृष्टि से विचार करना होगा। आज शिक्षा का व्यापारीकरण हो गया है, डिग्रियाँ पैसे से मिलेगी तो शिक्षा की गति क्या होगी? इतिहास से कामना नहीं अत: व्यापार एवं गणित पढ़ो, ऐसा भाव ही विकास होगा।
- जिस समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं धर्म मंहगे हो जाते हैं, वह समाज उन्नति नहीं कर सकते हैं।
- शिक्षा का व्यापक कार्य Information से transformation तक है। विज्ञान के ज्ञान के साथ अगर समझदारी नहीं है तो दिशा भ्रष्ट हो जाती है। समझदारी-विवेक न होने से रावण का इतिहास हम देख चुके हैं। शिक्षा नर से नारायण बनाने वाली होनी चाहिए।

- कोई बाहर से नहीं आया, सब यहीं के हैं। DNA mapping द्वारा यह स्पष्ट हो गया है कि 40000 वर्ष पूर्व से हम सब एक ही हैं।
- शिक्षक से शैक्षिक होकर अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ बनना है तो प्रबोधन एवं प्रवास निरन्तर आवश्यक है। कार्य में निश्चितता जरूरी है। यदि ऐसा करते हुए हम बढ़ते रहें तो सफलता मिलकर ही रहेगी, ऐसी शुभकामना है।

धन्यवाद ज्ञापन - डॉ. विनोद बनर्जी, अतिरिक्त महामंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रथम सत्र - शिक्षक की भूमिका

अध्यक्षता- प्रो. जे.पी. सिंहल - उपाध्यक्ष अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
विषय प्रवर्तक- प्रो. के. नरहरि जी- अध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
संचालन - श्री गोविन्द तिवारी- सचिव, प्राथमिक संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
विशिष्ठ अतिथि- श्री रामनाथ मोते- एमएलसी, कोंकण क्षेत्र, महाराष्ट्र विधान परिषद

प्रो. के. नरहरि

- शिक्षक का कर्तव्य विद्यार्थी के नकारात्मक गुणों को दूर कर उसके mindset को true करना है। ताकि वह ज्यादा receptive बन सके।
- शिक्षा के दोनों आयाम information एवं transformation महत्वपूर्ण हैं।
- information education देने के लिए शिक्षक को अद्यतन सूचनाओं के साथ विषय प्रवीण होना चाहिए तथा उसमें उसकी स्वयं की समस्याएँ आड़े नहीं आनी चाहिए। शिक्षक को शिक्षण का आनन्द लेते हुए विद्यार्थी को और गहन जानकारी के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- transformation education विद्यार्थी में व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय गुणों का विकास होना चाहिए।
- 'Values are caught and not taught' अत: शिक्षक, विद्यार्थी के लिए role model होना चाहिए।
- हम विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उनमें व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय गुणों का विकास करें- इसी से राष्ट्र का विकास संभव है।

अध्यक्षीय- प्रो. जे. पी. सिंहल

- शिक्षक समाज ही नहीं देश का दर्पण है।
- विद्यार्थी शिक्षक से ही सबसे अधिक सीखता है। अत: हमें आत्मनिरीक्षण करना है।

द्वितीय सत्र - संगठन का महत्त्व और कार्यकर्ता की भूमिका

अध्यक्षता- श्री किशन गोपाल जोशी- उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
विषय प्रवर्तक- श्री ओमपाल सिंह - सह संगठन मंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
संचालन- डॉ. नारायण मोहन्ती- सचिव, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
विशिष्ठ अतिथि- श्री भगवान सांलुखे- एमएलसी, महाराष्ट्र विधान परिषद

श्री ओमपाल सिंह

- हम एक मन, एक तौर तरीका, एक निश्चित प्रकार की कार्यशैली लेकर एक राह पर चलते हैं, तो संगठन का दिग्दर्शन होता है।
- We have divine power. We are divine instruments.
- शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का उत्थान संगठन का प्रमुख उद्देश्य है। साथ ही काल अनुरूप शिक्षक के निर्वाह की चिन्ता भी करनी है।
- कार्यकर्ता, कार्यालय, कोष व कार्यक्रम संगठन के लिए ये चार चीजें आवश्यक।
- शिक्षक पहले आदर का पात्र था, लेकिन आज उसे भी मांगने वाली श्रेणी में आना पड़ा है, उस पर आरोप लगे हैं। आरोपों से मुक्त होकर शिक्षक को जोड़ना, पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है, पर असंभव नहीं। शिक्षक को समाज का फोकस बिन्दु बनाना है।
- धारा के विपरीत चलना पुरूषार्थ का कार्य है। इतिहास इन्हीं से बना है।
- हमें दूरस्थ को तटस्थ, तटस्थ को निकटस्थ निकटस्थ को केन्द्रस्थ बनाना है तभी संगठन कार्य आगे बढ़ेगा।
- सतत यात्रा, सक्रियता, आदर, स्नेह से ही संगठन रूपी ऐसा भवन बनता है जिसमें छेद करना फिर बहुत कठिन होता है।
- हमारे यहाँ न पुरूस्कार की परम्परा है, न बहिष्कार की परम्परा है, समाज के परिस्कार की परम्परा है।
- जो श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर निष्पाप चलता है, लोगों को साथ लेकर चलने की क्षमता रखता है, वही कार्यकर्ता है।
- सुविधा कम हो, मार्ग कठिन हो, राह अंधेरी हो तो 'अप्प दीपोभव:' इस प्रेरणा से कार्य करते चलें, कार्यकर्ता के लिए संदेश है।

अध्यक्षीय- श्री किशन गोपाल जोशी

- किसी भी चीज का महत्व उसके विलोपित होने पर चलता है। लोकतंत्र में संगठन महत्वपूर्ण है। संगठन में कार्यकर्त्ता महत्वपूर्ण है।

तृतीय सत्र - संवर्गश: बैठक - शिक्षकों की समस्याओं, छटे वेतन आयोग की क्रियान्विति की स्थिति, डॉ. चट्ठा कमेटी की अनुसंशाओं की क्रियान्विति की स्थिति, संवर्गश: आगामी कार्यक्रमों की योजना।

चतुर्थ सत्र - शिक्षक संगठन में कार्य करते समय आने वाली कठिनाईयाँ और समाधान

अध्यक्षता- ताई संजीवनी रायकर, एक्स एमएलसी, अध्यक्ष- एआईएसटीएफ, पूर्व महिला उपाध्यक्षा- अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

विषय प्रवर्तक- डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल - महामंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

संचालन- श्रीमती प्रियम्वदा सक्सेना- सचिव, महिला संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल

- संगठन में कार्य करते समय कठिनाईयाँ आती हैं, अचानक और नई कठिनाईयाँ भी आ सकती है अत: तैयारी एवं प्रशिक्षण आवश्यक।

स्वयं की कठनाई-

- Use me as I am की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। सीखने की प्रवृत्ति हमेशा रहनी चाहिए।
- आर्थिक शुचिता आवश्यक। एक-एक पैसे का हिसाब देना।
- बहिनों से बात करते समय चारित्रिक शुचिता आवश्यक।
- अहंकार से अपना ही बिगड़ता है संगठन का नहीं।
- स्वयं के प्रचार से परे रहकर संगठन का प्रचार करना। इच्छाओं का दमन आवश्यक। अपने रहते योग्य कार्यकर्ता को आगे बढ़ाना।

परिवार संबंधी कठिनाईयाँ-

- संगठन में समय परिवार के समय से ही आता है।
- बाहर की परेशानियाँ बाहर ही, घर में नहीं लाना।
- घर में कुछ समय एक साथ बिताना। बच्चों में संस्कार एवं पढ़ाई का ध्यान रखना।
- अपनी आय से घर को अधिकतम व्यवस्थित करना।

संगठन संबंधी कठिनाईयाँ-

- अपनी परिधि (कार्य क्षेत्र की) को पहचानना।
- अपने घर का मोह छोड़कर प्रवास हेतु तत्पर रहना।
- टोली निर्माण कर कार्य करना। कार्यकर्ता को अवसर देना।
- अभावों की चर्चा नहीं। कंगाल को कोई नहीं देता।
- सरकार न अनुकूल होती है न प्रतिकूल। अनुकूलता केवल पूर्व परिचय की है, सरकार beurocrats चलाते हैं।
- मान्यता लेकर काम करने की अपेक्षा नहीं करनी। काम करेंगे तो पहचान व मान्यता स्वयं मिलेगी।
- अपना उदाहरण स्वयं बने।

अध्यक्षीय- ताई संजीवनी रायकर

- सुनने की क्षमता जरूरी है, तभी विश्वास संपादन होता है। छोटी से छोटी बात को सुनकर समाधान खोजना, संगठन निर्माण के लिए आवश्यक है।

पंचम सत्र - शिक्षा में विदेशी निवेश और उसका प्रभाव

अध्यक्षता- कैप्टन गणेश कार्निक- एमएलसी, मंगलोर क्षेत्र, कर्नाटक विधान परिषद्।

विषय प्रवर्तक- मा. डॉ. भगवती प्रकाश जी शर्मा- राष्ट्रीय सहसंयोजक, स्वदेशी जागरण मंच

डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा

- अर्जुन सिंह द्वारा बनाया गया शिक्षा में विदेशी सेवा प्रदाताओं हेतु विधेयक मंत्रिमंडल में फरवरी 2007 में अनुमोदन हेतु प्रस्तुत हुआ जो संसद में पारित नहीं हो सका।
- विधेयक में चिन्ता की बात यह थी कि कोई भी विदेशी सेवा प्रदाता जो इसके अनुसार पंजीकरण करवा लेगा, उसे स्वत: ही Deemed University का दर्जा प्राप्त हो जाता। पाठ्यक्रम निर्धारण के लिए स्वतंत्र होकर अपनी शर्तों पर विश्वविद्यालय चलाता।
- कपिल सिब्बल ने संशोधनों के बाद पुन: बिल को केबिनेट की सूची में शामिल किया। इसमें स्वत: Deemed University का प्रावधान विलोपित किया गया है। लेकिन केवल नामकरण ही खत्म हुआ है, पंजीकृत विदेशी शिक्षा प्रदाता को Degree व Diploma देने की Power होगी।
- पूरे विषय को लेकर सरकार के भीतर ही गंभीर मतभेद।
- 1991 के बाद आवश्यक जन प्रतिरोध नहीं हुआ। फलत: made in India चमक रहा है made by India लुप्त है।
- यूरो अमेरिकन देश वृद्धों के देश बन रहे हैं, उत्पादक, कार्यशील जनसंख्या घट रही है अत: उनकी नजर विकासशील देशों पर।
- यूरो अमेरिकन कंपनियाँ 2/3 लाभ अपने देश में ले जाती हैं, जिससे प्राप्त होने वाले कार्पोरेट टैक्स से ये देश अपनी सामाजिक सुरक्षा का खर्च चला रहे हैं।

- उद्योग में वर्चस्व के बाद इनका आगामी लक्ष्य सेवा क्षेत्र।
- GATS पर अभी देशों में गंभीर मतभेद। अत: सेवा क्षेत्र अपने पर कोई बाध्यता नहीं लेकिन भ्रम की स्थिति फैलाई जा रही है।
- GATS के प्रावधान खतरनाक। इसके अनुसार सरकारी एवं विदेशी सेवा प्रदाता में भेदभाव नहीं किया जा सकता। most favoured nation clause से देश की संस्कृति एवं अखण्डता को खतरा।
- 1998 से पूर्व शिक्षा में लागत वसूली पर छूट नहीं थी। फिर No loss No Profit आधारित विचार आया। अब दबाव cost वसूली के साथ profit पर भी, ऐसी स्थिति विडम्बनापूर्ण है।
- इससे शिक्षा के व्यापारीकरण की अंधी दौड़ प्रारंभ होगी। ऐसे संस्थान संस्कारों को धूल धूसरित करने के माध्यम बन जायेंगे। हमारी वर्जनाएँ बच पायेंगी, इसमें संदेह है।
- स्तरीय विश्वविद्यालय नहीं आयेंगे बल्कि corporate universities ही देश में लाभ कमाने के उद्देश्य से आयेंगी।
- हममें से प्रत्येक को व्यापक जन जागरण द्वारा विदेशी सेवा प्रदाता द्वारा राष्ट्र को होने वाले नुकसान का जनजागरण करना होगा। तभी सरकार पर परिवर्तन का दबाव बनेगा।

अध्यक्षीय- कै. गणेश कार्निक

- ABRSM में एक Higher education group हो जो FDI व शिक्षा में विदेशी निवेश का प्रतिरोध करने के लिए काम करे।
- भारत को एक बाजार के रूप में देखा जा रहा है, यूरो अमेरिकन देशों में पैसे देकर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या घट रही है।
- हमें शिक्षा का अपना Model बनाना होगा जो बाकी दुनिया के लिए भी Model बने, जहाँ शिक्षा लाभ का माध्यम नहीं बल्कि एक मिशन हो।

षष्ठ सत्र - दायित्वानुसार बैठक- अलग-अलग गटानुसार 1. अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, 2. महामंत्री, मंत्री/ सचिव, 3. संगठन मंत्री, 4. कोषाध्यक्ष, 5. महिला मंत्री, 6. सीनेट, सिण्डीकेट सदस्य एवं प्रकोष्ठ प्रमुख

सप्तम सत्र- सच्चर रिपोर्ट और उसका प्रभाव

अध्यक्षता- डॉ. निर्मला यादव, उपाध्यक्ष, महिला संवर्ग- अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

विषय प्रवर्तक- डॉ. राकेश सिन्हा- एसो. प्रोफेसर, मोती लाल नेहरू कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

संचालन- श्री महेन्द्र कुमार- प्रभारी उच्च शिक्षा संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

डॉ. राकेश सिन्हा

- रिपोर्ट Submit किए जाने के 2 वर्ष बाद भी प्रासंगिक। समय के साथ प्रासंगिकता बढ़ेगी।
- इस समय Dominent ideology ऐसे लोगों की है, जिन्हें देश से कोई लेना देना नहीं है। इस स्थिति में परिवर्तन जरूरी है।
- सच्चर समिति मुस्लिमों के शैक्षिक एवं भौगोलिक जनआंकेय आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर बनाई गई। लेकिन कमेटी आंकड़ों का खेल बन गई।
- कमेटी को मुस्लिमों को पिछड़ा घोषित करने लायक कोई तथ्य नहीं मिले। मुस्लिमों की जनसंख्या वृद्धि पर हिन्दूओं से ज्यादा, शहरीकरण का प्रतिशत भी हिन्दुओं की तुलना में ज्यादा पाया गया तो कमेटी ने एक अध्याय इसमें जोड़ा, यदि पुन: राष्ट्र की अखंडता संकट में पड़ती है तो यह अध्याय ही इसका कारण होगा।
- रिपोर्ट में लिखा गया कि मुस्लिम माँ बाप के साथ नामांकन करवाते समय स्कूल में भेदभाव होता है, मुस्लिम महिलाओं के लिए बुर्का उनका शस्त्र बन जाता है, टोपी, दाढ़ी रखने वाले मुस्लिमों को उठा लिया जाता है, मुस्लिमों के साथ संस्थागत भेदभाव होता है आदि।
- कमेटी ने कुल 40000 पृष्ठ के Documents दिये हैं, उनका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कमेटी नियमों को ताक में रखकर एकपक्षीय कार्य कर रही थी। कमेटी के सदस्य डॉ. राकेश वसंत ने जब आपत्ति दर्शाई कि कार्य का विभाजन संतुलित नहीं है, Data analysis वे कर रहे हैं, जिन्होंने यह कभी नहीं किया, तो उनकी आपत्ति को दबा दिया गया, कोई जवाब नहीं दिया गया।
- सच्चर और 5 मुस्लिम सदस्यों ने मिलकर वह काम कर दिया जो परतंत्रता में मुस्लिम लीग ने किया। सच्चर साहब का back ground देखें तो पता चलता है कि वे यह वफादारी किसके प्रति निभा रहे थे।
- सच्चर की अनुशंसा में यह भी है कि सुरक्षित सीटों को Decrease कर दिया जाए। चुनाव क्षेत्रों का परिसीमन इस प्रकार किया जाए कि पूरी Constitutency के मुसलमान एक ही constituency में आ जाएं। यही तो द्विराष्ट्रवाद है कि मुस्लिम-मुस्लिम को चुने, हिन्दू-हिन्दू को चुनें। सच्चर समिति में सारे शोध सहायक मुस्लिम नियुक्त किये गए। मिली गजट नामक इस्लामिक पत्र को अंक छपने के बाद भी नियमों के परे जाकर विज्ञापन online edition को दिये गए।
- हमें संगठन के माध्यम से व्यापक जनजागरण करना होगा, इसके दुष्परिणामों के बारे में जनजागरण करके ही सरकार पर दबाव बनाया जा सकता है।
- समिति ने यह भी अनुशंसा की कि समान अवसर आयोग बने। लेकिन यह आयोग केवल उन्हीं के लिए जो पीड़ित, वंचित और

पिछड़ा है। अब SC,ST, OBC व महिलाओं के लिए अलग-अलग आयोग हैं तो फिर यह आयोग क्यों? स्पष्ट है सच्चर की नजर में नवीनतम पिछड़ा वर्ग मुसलमान है और यह आयोग उन्हें संवैधानिक रूप से अधिक अधिकार दिलवाने का प्रयास है।

- यदि इतिहास से तुलना करें तो पता चलता है कि हंटर आयोग की रिपोर्ट का ही संशोधित रूप है सच्चर आयोग की रिपोर्ट। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट सिर्फ अकादमिक उत्कृष्टता का संघर्ष नहीं बल्कि एक राजनैतिक लड़ाई है, जिसके व्यापक एवं दूरगामी परिणाम होंगे।

अध्यक्षीय- डॉ. निर्मला यादव

- इस रिपोर्ट में जो कुछ आंकड़े छिपा लिये गये हैं उसके लिए हमें कुछ ऐसे विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ेगी जो उसे उद्घाटित कर सकें।

अष्टम सत्र - प्रस्ताव सत्र - इसमें तीन प्रस्ताव पारित किये गये।

1. दसवीं की बोर्ड परीक्षा समाप्ति के निर्णय पर पुनर्विचार हो

2. शैक्षिक परिवर्तनों के दौर में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आवश्यक

3. शिक्षक समस्याओं के समाधान की मांग

नवम् सत्र - संगठन की दशा एवं दिशा

अध्यक्षता- श्री बाबा साहेब काले- उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

विषय प्रवर्तक- श्री महेन्द्र कपूर- संगठन मंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

संचालन - श्री टी. सुब्बाराव-सचिव, माध्यमिक संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

श्री महेन्द्र कपूर

- राज्यों में 1952 से हमारा काम। ध्यान आया कि शिक्षक के साथ-साथ शिक्षा का भी विचार हो, विद्यार्थी में राष्ट्रीय भाव जागरण एवं शिक्षकों में कर्तव्य बोध हो, इस बात से तत्कालीन केन्द्रीय संगठन सहमत नहीं, उनका दायरा शिक्षक समस्याओं तक ही सीमित।
- शैक्षणिक महासंघ के नाम से 1988 भोपाल में कार्यारम्भ का निर्णय। विधिवत शुरूआत 1990 में हुई।
- सामाजिक सरोकारों के काम हमारे ध्येय वाक्य को केन्द्र में रखकर हम करने लगे हैं, वेतन भत्तों के अलावा चिन्तन करने वाले शिक्षक संगठन की छवि बनी है।
- शिक्षक को अपने वेतन भत्तों के लिए चौराहे पर आना पड़े, यह दुर्भाग्य की बात है। शिक्षक का सम्मान कम हुआ है, 62 वर्षों में हमारा क्या योगदान रहा है, इसका विचार करना होगा।
- शिक्षण कार्य से वंचित होकर जो संगठन कार्य करते हैं वे न तो शिक्षा का भला करते हैं, न समाज का भला करते हैं। हमारी पहचान एक समर्पित शिक्षक के रूप में हो, तभी हम संगठन की सोच को सार्थक कर सकते हैं।
- 65 लाख शिक्षकों में से 7.25 लाख शिक्षक ही हमारे औपचारिक सदस्य हैं, लक्ष्य बड़ा है, रास्ता लम्बा है, अपनी बात हमें सब तक पहुँचानी है।
- संगठन कार्य को बढ़ाने के लिए वर्ष भर की योजना जरूरी है। नियमित सदस्यता करनी ही चाहिए। हमें कम से कम 15 लाख सदस्यें का लक्ष्य लेना है सदस्यता से ही सरकार एवं समाज पर प्रभाव पड़ता है। हमारा मनोबल बढ़ता है, कार्य को सम्बल मिलता है।
- बैठक एवं अधिवेशन के प्रस्ताव हमारी सोच के परिचायक हैं। उनकी जानकारी नीचे तक ठीक से पहुँचे, समाज को उनकी जानकारी मिले, ऐसी अपेक्षा हमसे है।
- शैक्षिक प्रकोष्ठ, प्रकाशन प्रकोष्ठ, प्रशिक्षण वर्ग आदि संकल्पनाएँ जिला स्तर तक मूर्त रूप ले, ऐसा हमें विचार करना है। समसामयिक विषयों पर समाज का प्रबोधन करना, मतव्यक्त करना, workshop, seminar की योजना करनी चाहिए।
- संगठन में नित्य समय देने की योजना हमारे मन में हो, प्रवास-प्रबोधन लगातार होता रहे, तो जिस लक्ष्य को लेकर हम चले हैं, वह निश्चित ही शीघ्र प्राप्त होगा।

अध्यक्षीय- श्री बाबासाहेब काले

- संगठन की सदस्यता बढ़ाने से कई प्रकार के समाधान अपने आप होंगे। इससे समाज और सरकार पर भी विशेष प्रभाव पड़ेगा।

दशम सत्र - खुला सत्र - सम्भागी बन्धुओं के सुझाव प्राप्त हुए।

समारोप सत्र -

मुख्य अतिथि - मा. सुरेश जी सोनी (सहसरकार्यवाह - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

अध्यक्षता-मा. के. नरहरि

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल - अधिवेशन की जानकारी एवं अपेक्षाएँ

- 21 राज्यों के 197 जिलों से 847 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें प्राथमिक संवर्ग से 346, माध्यमिक संवर्ग से 350, उच्च शिक्षक संवर्ग 102, अन्य 49। हर्ष नहीं लेकिन चलने की दृष्टि से ठीक है। हमें अभी और आगे जाना है।
- 2011 में 15 लाख सदस्यता का हमारा जो लक्ष्य है, उस दृष्टि से अधिवेशन मील का पत्थर सिद्ध होगा।
- हमारे जो बंधु/भगिनी अपेक्षित रहे, वो आए या नहीं लेकिन अपने प्रान्त तक इस अधिवेशन का विषय सब तक पहुँचे, इसकी

योजना करनी है।

- यहाँ पारित प्रस्तावों की चर्चा अपने प्रान्त की बैठक में होनी चाहिए।
- अपेक्षित सदस्य के ना आने की वजह का भी विचार उनसे किया जाए।
- कार्यकर्ता निर्माण की दृष्टि से राज्य इकाई पर अभ्यास वर्गों का आयोजन नीचे के स्तर तक होनी चाहिए।
- सांगठनिक कार्यक्रमों में राज्य इकाई के प्रमुख कार्यकर्ता संगठन की स्दस्यता एवं विश्वसनीयता के आवश्यक कदमों का निर्धारण भी करें। वित्त नियोजन का अनुशासन भी आवश्यक है।
- सच्चर समिति के प्रस्तावों पर समाज जागरण के कार्यक्रमों की योजना करनी चाहिए।

मा. सुरेश जी सोनी

- इस अधिवेशन से भी हमें अपेक्षा रही है और जो प्राप्त किया है उस अन्तर को कम किया जाना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।
- हमारे लक्ष्य को जो हमने आगे बढ़ने के लिए तय किया, वहाँ उस ओर बढ़ रहे हैं कि नहीं, अगर बढ रहे हैं तो हमारी दिशा ठीक है कि नहीं, इसे भी बीच-बीच में देखना आवश्यक है।
- गन्तव्य तक पहुँचना है तो हमें अपने आपको देखना होगा- विहंगावलोकन, सिंहावलोकन, आत्मावलोकन यदि इन चरणों में अवलोकन हो तो हमारा व्याप व कार्यकर्ता निर्माण दोनों चरण पूरे हो जाते हैं।
- परिस्थिति की जानकारी आवश्यक है परन्तु उसकी भयानकता को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए।
- हमने अगर परिवर्तन का मार्ग चुना है तो हमें तब तक चलते रहना है जब तक परिवर्तन नहीं हो जाए। मगर इस उपलब्धि के बाद हमारे आगे के चरणों की रूपरेखा भी ध्यान में रखनी चाहिए।
- भारतीय एवं पाश्चात्य मान्यताओं में मूलभूत अन्तर अवधारणा का है। इनके संघर्ष से समस्याएँ हैं, और यह सब एक दिन का प्रतिफल नहीं है।
- दुनिया के विघटन की पहली अवधारणा मजहबी है, जिसके कारण मतान्तरण एवं आतंकवाद जैसी प्रवृत्तियों का प्रस्फुटन होता है।
- जो शोषण की वृत्ति विगत 1700 साल में दृष्टिगोचर नहीं हुई, वह विज्ञान एवं तकनीक के विकास के कारण विगत पचास वर्षों में बहुत व्यापक हो गई।
- व्यक्ति की वृत्ति जब अर्थ प्रधान हो जाती है, तो विकृतियों का विस्तार हो कर नैतिकता का पतन हो जाता है। मनुष्य एक संसाधन बन जाता है।
- पाश्चात्य अवधारणाओं से पर्यावरण का जो संकट पैदा हुआ है वह जीव सृष्टि के लिए घातक है। इसका निदान भारतीय चिन्तन में ही है। एकाकी परिवारवाद की अवधारणा भी पाश्चात्य संस्कृति की ही देन है। अत: भारतीय चिन्तन को प्रबल करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रयोग करने की दृष्टि से बढ़ना होगा।
- शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य निर्माण है, पुस्तक पढ़ना, उपाधि लेना इसका वास्तविक उद्देश्य नहीं है।
- भारतीय दृष्टिकोण से विज्ञान एवं धर्म के समन्वय से ही विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।
- मनुष्य को तन्त्र का उपयोग करना चाहिए न कि वह तंत्र का गुलाम बन कर रह जाए- इस दृष्टि से Human resource नहीं Human source होना चाहिए।
- यदि शिक्षक ने अपने विचार केन्द्र में अपना विषय रखा तो नीरसता आने की संभावना है, यदि केन्द्र में विद्यार्थी रहेगा तो निरन्तर सरलता के साथ विकास होगा।
- सांगठनिक व्यवस्था में हम कार्य करने वाले, समय देने वाले, प्रवास करने वाले तो बहुत कार्यकर्ता हैं, मगर समाज को विकल्प देने वाले, विषय पर चिन्तन कर लेखन करने वाले, प्रबोधन करने वाले कितने हैं, इस ओर भी ध्यान देना होगा।
- संगठन में वृत्त विवरण की तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन होना अपेक्षित है।
- कार्यकर्ता से जीवन्त संवाद एवं विश्वास बना रहना भी संगठन के विकास के लिए आवश्यक है।
- संगठन में एकत्व की अनुभूति हो। अपना सामर्थ्य बढ़े, सदस्यता बढ़े, आने वाले समय में भारत का भविष्य शिक्षा ही बदलेगी, इस बात को ध्यान रखते हुए अपना संगठन बढ़ाना है।

विशेष-

1. उद्घाटन सत्र से पूर्व संगठन यात्रा की 'चित्रमय प्रदर्शनी' का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. के. नरहरि जी ने किया।
2. 24 अक्टूबर 2009 को रात्रि सत्र में 'प्रान्तश: बैठकें' सम्पन्न हुई।
3. 25 अक्टूबर 2009 को रात्रि सत्र में वीर रस का 'कवि सम्मेलन' सम्पन्न हुआ।
4. उद्घाटन सत्र में मा. मोहनराव भागवत जी ने 'शिक्षा: इण्डिया से भारत की ओर' स्मारिका का विमोचन किया।
5. सच्चर विषय प्रवतर्न के सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. के. नरहरि जी ने 'Towards Further Balknisation of India' एवं 'अलगाववाद का जहर' पुस्तकों का विमोचन किया।

□